भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर -2026-27

कक्षा-10	विभाग: हिंदी	दिनांक -19-04-26
QB	**पद-मीरा बाई**	**Write the Q&A in your Hindi Note Book.**

नाम: ___________________ अनुभाग: ___________ अनुक्रमांक: ______________

प्रश्न 1- पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

उत्तर- मीरा ने कृष्ण को उनके रक्षक-रूप की याद दिलाई है।मीरा कहती है –"हे प्रभु ! आपने भरी सभा में वस्त्र बढ़ाकर द्रौपदी की लाज रखी, नरहरि का रूप धारण कर भक्त प्रहलाद की रक्षा की, डूबते हुए गजराज (ऐरावत) को मगरमच्छ से बचाया था।इसी प्रकार आप मेरा भी उद्धार करें अर्थात मेरा भी दुःख दूर करें।"

प्रश्न 2 दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर -: दूसरे पद में मीरा श्याम की चाकरी करना चाहती है क्योंकि वे उनकी अनन्य भक्त हैं और निरंतर उनकी सेवा में लगे रहना चाहती हैं। वे श्रीकृष्ण के लिए बाग़ लगवाना चाहती हैं, प्रतिदिन सवेरे उठकर उनके दर्शन करना चाहती हैं और वृंदावन की कुंज गलियों में घूम-घूमकर उनकी लीलाओं का गान करना चाहती हैं जिससे दर्शन, स्मरण और भाव-भक्ति की पूर्ति हो सके।

प्रश्न-3 मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रुप–सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

उत्तर -: मीराबाई ने श्री कृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन इस प्रकार किया है – श्रीकृष्ण का रूप-सौंदर्य सबको आकर्षित कर देता है। उन्होंने अपने माथे पर मोर के पंखों का बना सजीला मुकुट पहन रखा है। गले में वैजयंती माला सुशोभित है। उन्होंने पीले रंग के वस्त्र धारण किए हुए हैं। मीरा कहती हैं कि जब श्रीकृष्ण वृन्दावन में गाय चराते हुए बाँसुरी बजाते हैं तो सब का मन मोह लेते हैं।

प्रश्न-4 मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- मीराबाई के पदों की भाषा में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती का मिश्रण पाया जाता है। वहीं पंजाबी, खड़ीबोली और पूर्वी के प्रयोग भी मिल जाते हैं।ब्रज की सुकोमलता और राजस्थान की अनुनासिकता के कारण इसमें अद्भुत मिठास आ गई है। भाषा सरल एवं सहज है। पदावली कोमल, भावानुकूल व प्रवाहमयी है, पदों में भक्तिरस है तथा अनुप्रास, पुनरुक्ति प्रकाश, रुपक आदि अलंकारों का प्रयोग हुआ है। मीरा की भाषा शैली को गीत शैली कहा जा सकता है। इसमें मधुरता और संगीतात्मकता के दर्शन होते हैं। मीरा के सभी पद गेय हैं।

प्रश्न-5. वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या–क्या कार्य करने को तैयार हैं?

उत्तर- मीरा कृष्ण को पाने के लिए अनेकों कार्य करने को तैयार हैं। वे नौकर बनकर कृष्ण की सेवा करना चाहती हैं। उनके विहार करने के लिए बाग बगीचे लगाना चाहती है। वृंदावन की गलियों में उनकी लीलाओं का गुणगान करना चाहती हैं, ऊँचे–ऊँचे महलों में खिड़कियाँ बनवाना चाहती हैं ताकि आसानी से कृष्ण के दर्शन कर सकें। वे कुसुम्बी साड़ी पहनकर आधी रात को यमुना नदी के किनारे कृष्ण के दर्शन पाना चाहती हैं।

प्रश्न – 6. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:

(i)हरि आप हरो जन री भीर।

द्रौपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर।

भगत कारण रूप नरहरि धरयो आप सरीर।

उत्तर: *इन पंक्तियों में कृष्ण के भक्त-वत्सल और भक्त-रक्षक रूप का वर्णन है । भगवान अपने भक्तों के दुख दूर करने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। जब द्रौपदी पर गहरा संकट आया था, उनकी लाज पर खतरा था तब भगवान ने वस्त्र बढ़ाकर उनकी लाज बचाई थी। भक्त प्रह्लाद की जान बचाने के लिए तो भगवान ने नरसिंह का शरीर धारण कर लिया था।

*ब्रज और राजस्थानी का मिश्रण है । 'री' में राजस्थानी और 'बढायो' में ब्रज का प्रभाव स्पष्ट है ।

*गेय पद्धति का प्रयोग *'र' की ध्वनि के कारण पदों में अद्भुत माधुर्य आ गया है ।

(ii)बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुञ्जर पीर।

दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर॥

उत्तर: इन पंक्तियों में मीरा ने उस घटना का उल्लेख किया है जब ऐरावत एक मगरमच्छ के चंगुल में फँस गया था। कृष्ण ने समय पर आकर मगरमच्छ को मारकर ऐरावत की जान बचाई थी।इसी प्रसंग में मीरा ने कृष्ण से अपनी रक्षा के लिए भी गुहार लगाई है ।

*इन पंक्तियों में मीरा ने कृष्ण को 'गिरधर' नाम से पुकारा है । यह कृष्ण का जन-रक्षक रूप है ।

* 'काटी कुण्जर' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है ।

(iii)चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची।

भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

उत्तर: मीरा कहती हैं कि कृष्ण की सेवा करने से उन्हें अनेक लाभ होंगे –प्रभु-दर्शन का अवसर मिलेगा । नाम-स्मरण रुपी जेब-खर्च प्राप्त होगा । भावपूर्ण भक्ति की जागीर प्राप्त होगी ।

- 'भाव भगती' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग हुआ है ।
- मीरा की विनय-भक्ति और समर्पणशीलता प्रकट हुई है ।

प्रश्न 7. 'तीनू बाताँ सरसी' के माध्यम से कवयित्री क्या कहना चाहती है? उसकी यह मनोकामना कैसे पूरी हुई?

उत्तर: कवयित्री मीरा अपने प्रभु श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं। वे श्रीकृष्ण की चाकरी करके उनका सामीप्य पाना चाहती थी। इस चाकरी से उन्हें अपने प्रभु के दर्शन मिल जाते। उनका नाम स्मरण करने से स्मरण रूपी जेब खर्च मिल जाता और भक्तिभाव रूपी जागीर उन्हें मिल जाती। उन्होंने अपनी इस मनोकामना की पूर्ति कृष्ण की अनन्य भक्ति के माध्यम से पूरी की।

प्रश्न:8. भगवान को नरहरि का रूप क्यों धारण करना पड़ा?

उत्तर: हिरण्यकश्यप नामक एक अत्याचारी एवं अभिमानी राजा था। वह स्वयं को ही ईश्वर मानता था; परंतु उसका पुत्र कृष्ण का परम भक्त था। हिरण्यकश्यप ने प्रहलाद को तरह-तरह से समझाया कि वह प्रभु भक्ति छोड़कर उसे (हिरण्यकश्यप) ही भगवान माने पर प्रहलाद तैयार न हुआ। हिरण्यकश्यप क्रोधित हुआ और उसने प्रहलाद की जान लेनी चाही । उस समय भगवान ने नरसिंह का रूप धारण कर प्रहलाद की रक्षा की और हिरण्यकश्यप का वध किया ।